



धारण करे तो धर्म



विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

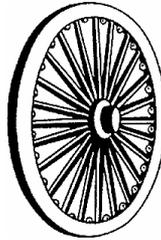


विपश्यना विशोधन विन्यास

धारण करे तो धर्म

(धर्म के वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश)

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का



विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि इगतपुरी

धारण करे तो धर्म

पुस्तक कोड: **H10**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : जनवरी 1999

द्वितीय संस्करण : जून 2003

पुनर्मुद्रण : 2010, 2013, दिसंबर 2016, अक्टूबर 2021
अगस्त 2022,

तृतीय संस्करण : दिसंबर 2025

मूल्य : रु.

Price: Rs.

ISBN 81-7414-200-2

प्रकाशक:

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३

जिला- नाशिक, महाराष्ट्र

फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,

८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,

८४८४८३९८३७, ८४८४८३९८३५

Email: vri_admin@vridhamma.org

Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:

अपोलो प्रिंटिंग प्रेस

२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.

सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

धारण करे तो धर्म

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय	7
1. भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा	9
निर्मल धर्म	17
धर्म को समझें	23
धर्म सनातन	27
2. बुद्ध और धर्म	32
वास्तविक ब्रह्मयान	32
धर्माचरण ही ब्रह्माचरण	34
धर्म धारण करें	36
अमित असीम धर्म	40
सही अहिंसक	43
शुद्ध धर्म का आकलन	46
बुद्ध किसे कहते हैं	49
धारण करे सो धर्म	56
3. आंखों देखा विवरण	63
ब्रह्मायु धन्य हुआ	70
4. असीम करुणानिधान	77
रक्त-रंजित यज्ञ	78
असीम करुणानिधान-	82
5. बड़े पारमी क्षांति की	88
पुत्र-वियोग	88
पत्नी-वियोग	91

अग्रज-वियोग	92
पितामह-वियोग	92
पिता-वियोग	93
6. धर्म-समन्वित	95
7. कीचड़ में कमल खिला	101
नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी.....	105
8. पुरुषार्थी कौमारभृत्य	111
जीवक की प्रसिद्धि	115
राजगृह का नगरश्रेष्ठि.....	116
काशी का श्रेष्ठिपुत्र	116
राजा प्रद्योत	117
भगवान बुद्ध को दुशाला	119
9. राजकुमारी चुंदी के प्रश्न.....	121
10. अभागा राजकुमार जयसेन.....	126
भ्रमित जयसेन.....	131
11. महाली लिच्छवी.....	138
धन्य हुई वैशाली	143
12. अनाथपिंडिक.....	152
बुद्ध दर्शन.....	152
धर्म दर्शन	156
संघ दर्शन	162
दान-चेतना.....	167
अनर्घ दान	173
13. तथागत का पार्थिव शरीर.....	180
विपश्यना साधना केंद्र	184



धारण करे तो धर्म

धारण करे तो धर्म है, वरना कोरी बात ।
सूरज उगे प्रभात है, वरना काली रात ॥

प्रकाशकीय

प्रकाशकीय

कल्याणमित्र श्री सत्यनारायणजी गोयन्का की कई धर्म-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके अनेक लेख, प्रश्नोत्तर तथा प्रवचनों के अंश समाचार पत्र-पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए हैं। श्री गोयन्काजी के प्रवचन कई टीवी-चैनलों पर प्रसारित होते रहते हैं। इन सबसे अनेकानेक लोग प्रेरणा पाकर, शुद्ध धर्म की ओर आकर्षित होकर, उनके या उनके द्वारा मनोनीत सहायक आचार्यों के मार्गदर्शन में विपश्यना-ध्यान के दस दिवसीय शिविरों में सम्मिलित होकर सही माने में धर्मलाभी हुए हैं। पुराने साधकों को इस विपुल साहित्य से धर्म की गहराइयों को समझने और जीवन में उतारने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

प्रमुख विपश्यना केंद्र, धम्मगिरि, इगतपुरी से 'विपश्यना विशोधन विन्यास' साधकों के लाभार्थ 'विपश्यना' नाम से हिंदी और अंग्रेजी में पत्रिकाएं भी प्रकाशित करता है। पूज्य गुरुजी के लेख, तत्संबंधित धम्मवाणी और उनके स्वरचित दोहे 'विपश्यना' मासिक (हिंदी) के अविभाज्य अंग हैं।

इन पत्रिकाओं में पूज्य गुरुजी के अनेक लेख विषयगत क्रमशः छपे। परंतु कभी-कभी अन्य प्राथमिकताओं के कारण बीच में दूसरे विषय के लेख भी पत्रिका में छपते रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक "धारण करे तो धर्म" में पूज्य गोयन्काजी के ऐसे लेखों का समावेश किया गया है जिनमें 2600 वर्ष पुरातन भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में धर्म को सही ढंग से समझने और उन्हें धारण कर अपना लौकिक तथा पारलौकिक जीवन सुखी बनाने का सजीव चित्रण है। इससे समाज के हर वर्ग के लोग लाभान्वित हुए। 'विपश्यना' की वही कल्याणकारी विद्या भारत से लुप्त हो जाने के बाद बर्मा में गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा बहुत थोड़े से लोगों में, पर अपने शुद्ध रूप में जीवित रही, आज पुनः जन-जन को लाभान्वित कर रही है जो कि धर्म के सार्वकालिक स्वरूप को ही स्पष्ट करती है।

ऐसे अनमोल लेखों को संगृहीत कर मोतियों की तरह चुन-चुन कर विषयगत पिरोने में कुछ बातें बार-बार दोहरायी गयी हैं, पर धर्म की व्याख्या व स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए इन्हें दोहराना उचित ही लगता है। इस लेखमाला का हर मोती एक-दूसरे से जुड़े रह कर भी अपने आप में अलग विशिष्टता

लिए हुए है। विश्वास है पाठक इस प्रयास से प्रभूत प्रेरणा प्राप्त कर यथासंभव विपश्यना-शिविरों में सम्मिलित होकर धर्म के व्यावहारिक अभ्यास से न केवल अपना मंगल साधेंगे, बल्कि अन्य अनेकों के मंगल में भी सहायक बनेंगे। श्री गोयन्काजी के साहित्य-सृजन का यही एकमेव उद्देश्य है।

प्रकाशन समिति,
विपश्यना विशोधन विन्यास

